Post Modern Feminism —>
आधुनिक नारीवाद :—>

आजकल आधुनिक मान्यताओं के आधार पर ही निरन्तर बदलते आ रहे हैं। इसी क्रम में वर्ग, नस्ल और संस्कृतियों के आधार पर स्त्रियों की अनुभूति मंडल भी बदलता गया है। जिसके कारण नारियों के संबंध में कोई भी आधारभूत निरंतर रहने वाले किसी ठोस सत्य का निरूपण नहीं किया जा सकता। जो समाज में प्रचलित पितृसत्तात्मक सत्ता ही एक ऐसी व्यवस्था है जो समय के अनुसार बदलते हुए थपेड़ों का मुकाबला करते हुए आजकल भी एक आधारभूत अवधारणा मूल रूप में अपने अस्तित्व को बरकरार रखने में समर्थ हुई। यही एक ऐसी व्यवस्था है जो द्विपद विलोमों की श्रृंखला-सी बनाकर जीवित रही है और आगे भी इसका अस्तित्व बने रहने की आशा की जा सकती है।

परिवार में स्थित द्विपदों में एक पद उच्च अर्थ वाला होता है, तो दूसरा निम्न अर्थ वाला। एक उसके मूल में रहता है, तो दूसरा उसकी प्रतिकृति या विकृति होती है और यही नहीं एक उच्च स्तरीय होता है तो दूसरे का अस्तित्व ही नष्ट होने को होता है। यही कारण है कि पितृसत्तात्मक प्रधान सामाजिक व्यवस्था में स्त्रियों को अभी तक भी 'दोयम' दर्जे वाली वस्तुओं में ही गिना जाता है। हेलेन सिक्सू लिखती हैं कि "भाषा पितृसत्तात्मक समाज की भाषा चूंकि उनके साथ न्याय नहीं करती और उनके प्रति पूर्वाग्रह रखती है, इसलिए स्त्रियों को चाहिए कि भावात्मक प्रयोगों द्वारा भाषा की सरहदों को भी तोड़ें।"

Scanned with OKEN Scanner

वर्तमान युग में नारी की स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए नारीवाद के समर्थक तथा आधुनिक समाजशास्त्रियों द्वारा जिन सैद्धांतिक आधारों का प्रयोग किया गया है, वे हैं- मार्क्सवादी नारीवाद, आमूल परिवर्तनवादी नारीवाद तथा उदारवादी नारीवाद को ही समझा गया है, क्योंकि इसके अनुसार, "स्त्री-पुरुषों के प्रति संघर्ष के लिए प्रेरित नहीं किया जाता है" और न ही आमूल परिवर्तनवादियों के अनुसार, "एक लिंग को दूसरे के अधीन रहने की बात को स्वीकार किया जाता है" इसलिए उदारवादी नारीवाद ही नारी-स्थिति को सामाजिक स्थिति का सर्वोत्तम आधार माना गया है। इसके अतिरिक्त यह उदारवादी नारीवाद जहाँ एक ओर स्त्री पुरुष के समान अधिकारों का समर्थन करता है, वहीं दूसरी ओर श्रम विभाजन के सिद्धांत का भी समर्थन करता है, जिस आधार पर स्त्री को घरेलू काम-काज के लिए उपयोगी समझा गया है और पुरुषों को बाहरी कामकाज के लिए उपयोगिता प्रदान की गयी है।"

आधुनिक युग में भारतीय नारी के साथ होने वाले विषमतापूर्ण व्यवहार के लिए जिन कारकों को उत्तरदायी माना जाता है, उनमें व्यक्तिगत, आर्थिक सामाजिक तथा राजनैतिक कारक भी प्रमुख हैं, जो व्यक्ति कुण्ठा, असुरक्षितता एवं नैराश्य की भावना से पीड़ित होते हैं।

इस प्रकार, विभिन्न प्रकार के नारीवाद एवं उनके सैद्धांतिक आधारों के अतिरिक्त आधुनिक समाज में इन रचनाओं के आधार पर भी स्त्रियों की स्थिति का मूल्यांकन किया गया। व्यावहारिक रूप से यदि देखा जाए तो आज भी स्त्रियों की स्थिति पुरुषों की अपेक्षा निम्न स्तर की ही है अ भारतीय व्यावहारिक नारी एवं उनके विभिन्न संगठनों को अपने हितों व अधिकारों के प्रति भरसक प्रयास करने आवश्यकता है ताकि उदारवादी नारीवादियों की मान्यता के अनुसार "स्त्री-पुरुष में समानता की स्थिति भारतीय समाज स्थापित हो।"

FEBRUARY
MARCH
APRIL
Scanned with OKEN Scanner